[Conference- Innovation in Music & Dance :January,2015] ISSN- 2350-0530(O) 2394-3629(P)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i1SE.2015.3466

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

गढ़वाल की रामलीला का समाज पर प्रभावः एक सांगीतिक अध्ययन

डॉ. सन्तोष कुमार पाठक
एसोसिएट प्रोफेसर
निधि चिटकारिया
शोधार्थी, संगीत विभाग
वनस्थली विद्यापीठ (राजस्थान)

भारतीय संस्कृति अपने में विभिन्न सांस्कृतिक धाराओं को समेटे हुये है, इन्हीं सांस्कृतिक धाराओं में एक धारा मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान राम की लीला भी समाहित है। इसका अपना एक अलग प्रवाह स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है, जो भारतीय संस्कृति के साहित्य में तथा समाज में अपनी सांस्कृतिक व संस्कारित प्रभाव में विद्यमान है। श्री राम के चरित्र का वैशिष्ट्य यही है कि उन्होंने मानव जीवन की यात्रा के मार्ग पर सम्पूर्ण विश्व को समान पथ–यात्री का संदेश देकर नई चेतना–शक्ति को जाग्रत किया और समस्त विश्व ने उन्हे वंदनीय बना दिया। रामलीला मंचन इसी प्रकार के जीवन दर्शन का सरोवर है, जिसमें एक देशीयता, जाति भेद, वर्णभेद ऊँच–नीच का भेद, गरीब अमीर का भेद जैसे सभी प्रकार के विकार अपना अस्तित्व खोकर एक हो जाते हैं तथा जिसमें मानवीय गुणों का उच्चादर्श परिलक्षित होता हैं। इन्हीं आदर्शों के साथ गढ़वाल की रामलीला 100 वर्षों से भी अधिक समय से यहाँ के समाज से जुड़ी है। आज भी यहाँ के समाज में बसने वाले लोग बड़े ही चाव के साथ 'संगीतमय रामलीला का मंचन करते है। जो कि गढ़वाल की रामलीला की मुख्य विशेषता है।

गढ़वाल क्षेत्र में इस धार्मिक कथानक को नाटकीय मंचन के रूप में प्रस्तुत करने की शैली गेयात्मक हैं। इस गेयात्मक लीला का शास्त्रीय अध्ययन करने से विदित होता है कि इसमें लोकरंजन की भावना ही नहीं अपितु अभिजात्य वर्ग को प्रभावित करने वाले कारक भी विद्यमान हैं। जब रामलीला के मंच का सीधा सम्बन्ध 'लोक' से स्थापित हो जाता है, तब मंच वैशिष्टयपूर्ण हो जाता है। यहां भारतीय शास्त्रीय संगीत के रागों में निबद्ध रचनाओं के गायन द्वारा सम्पूर्ण रामलीला को प्रस्तुत किया जाता है।

"स नादस्त्वाहतो लोके रंजको भव भंजकः
श्रत्यादिद्वारतस्तस्यादुत्पिरित–रूपते।।

(नमामि रामम् पौडी रामलीला के 113वें वर्ष में प्रकाशित दस्तावेज पृ.सं. 31)

संगीतपयोगी नाद जिसे आहत नाद कहा जाता है, समस्त जीवन का रंजक व भव भंजक है। अर्थात् संगीत का मानव जीवन पर प्रत्यक्ष रूप से प्रभाव पड़ता है। संगीत की रंजकता से चित्त शान्त व शरीर,स्फूर्तिदायक हो जाता है इस नाद से आन्तरिक शक्ति उजागर तो होती ही है बल्कि आत्मिक शान्ति का संचार भी होता है। ऐसा ही प्रभावी संगीत गढ़वाल की रामलीला का आधार हैं। मनोरंजन के सैंकड़ों साधनों की उपलब्धता के बाद भी सैकड़ों दर्शकों का हुजूम इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि गढ़वाल की रामलीला आज भी हमारी सांस्कृतिक विरासत तथा भारतीय एकता के प्रतीक के रूप में परिष्कृत व प्रमाणित होकर नये सोपानों पर विराजमान है। रामलीला को अक्षुण्ण बनाये रखने में यूं तो दृश्य– संयोजन, कला–पक्ष, वस्त्र–सज्जा, तकनीक इन सभी का अपना अलग ही महत्व है लेकिन संगीत पक्ष की दृष्टि से गढ़वाल की रामलीला अपने आप में अनूठी, बेहद कर्णप्रिय व चित्राकर्षक है। ये रचनायें शास्त्रीय रागों मालकौंस, दरबारी, जय जय वंती, देश, जौनपुरी आदि विभिन्न रागों से निरूपित व तीन ताल, झपताल, दादरा कहरवा आदि तालों में निबद्ध हैं। जो रामलीला के शास्त्रीय पक्ष को उजागर करती है।

यहाँ की रामलीला में शास्त्रीय होते हुये भी लोक का प्रभाव है। तभी तो शुद्ध रूप से राग ताल के स्थान पर आवश्यकतानुसार लोक धुने व ताल है। संगीतज्ञ कुमार गंधर्व के अनुसार– ''हम लोक धुनों में रागों को छुपा हुआ पाते हैं। उन्हें पकड़कर जब हम प्रकट कर देते है तो शास्त्रीय पक्ष सामने आ जाता है। शास्त्र व लोक का अद्भुत संगम यहॉ की रामलीला में देखा जा सकता हैं। इसमें लोक संगीत के तत्व प्रत्यक्ष रूप से न दिखाई देते हुए भी उसके नियम दिखाई देते हैं। इसलिए यह कह सकते हैं– एक ओर शास्त्रीय संगीत इसकी जड़ है तो दूसरी ओर लोक संगीत के प्रभाव से अद्भुत स्वरसंगति जड़ की शाखा के रूप में फैली हुयी है। गढ़वाल के समाज में रच–बस गयी रामलीला की इस शैली को श्रुतियों द्वारा अगली पीढ़ी दर पीढ़ी तक हस्तान्तरित करने की परम्परा रही हैं। शास्त्रीय रागों व तालों से सर्वथा अनभिज्ञ लोग भी शास्त्रीय रागों पर आधारित गीतों को श्रुति परम्परा के आधार पर ही सहज ही आत्मसात कर लेते हैं। नाटक–मंचन के लिये पूर्वाभ्यास में भी

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

संगीत पर ही जोर दिया जाता है। बुजुर्गों के संरक्षण में स्वर–लय के साथ गीत के बोल और अभिनय पक्ष को सशक्त बनाने के लिये महिनों पूर्व से ही प्रतिस्पर्द्धा आरम्भ हो जाती है।

यहां रामलीला में दोहा, चौपाई, छंद, राग–रागिनी के साथ–साथ पारसी थियेटर का प्रभाव भी स्पष्ट दिखाई देता है। समय–समय पर प्रयोग धर्मिता के आधार पर नये गीतों को भी शामिल किया जाता है। धुनों में इतनी किल्ष्टता होने के बाद भी यहां के समाज द्वारा सरलता के साथ इन गीतों को आत्मसात कर लिया जाता है तथा इन गीतों को संगीत कला में रूचि रखने वाले युवाओं के लिये शास्त्रीय रागों को सीखने व जानने का अवसर प्रदान किया जाता है। शास्त्रीयता के साथ यहां रामलीला में लोक का प्रभाव भी स्पष्ट होता है, जो स्वाभाविक है। कुछ गीत लोक भाषा में भी रचित है, जो समाज संगीत व रामलीला को और भी अधिक अटूट रूप से जोड़े हुये हैं। लोक भाषा, संगीत की अपनी शक्ति है। ''लोक जीवन में संगीत की जो स्वाभाविक, प्राकृतिक व निरन्तर प्रथा है, वह अनादिकाल से लोक जगत में नित नवीन प्रेरणा, नव जीवन व माधुर्य प्रदान करती रहती है। रामलीला में भी लोक धुनों का सामंजस्य विद्वानों व संगीतकारों के द्वारा समाज से सीधा सम्बन्ध जुड़ने की भावना से ही हुआ होगा। ये लोक धुनें रामलीला को एक नया रूप देती है जहाँ लोगों को आनन्द की अनुभूति के साथ–साथ आत्मिक शान्ति का भी आभास होता हैं। क्योंकि लोक धुनों व गीतों में व्यक्तिगत भाव का ही नहीं बल्कि समस्त लोक समाज के भावों की झाँकी दिखायी देती हैं।

रामलीला के संवाद गीतों के अतिरिक्त चौपाई, दोहों की भी एक विशिष्ट संगीतात्मक शैली है। दोहों के गायन की पद्धति परिस्थिति और पात्र के अनुसार भिन्न–भिन्न होती हैं। नाटकीय संवादों के उपयुक्त संगीत के प्रयोग की सर्वाधिक सफलता चौपाइयों के गायन से ही स्पष्ट होती है। यहाँ दो तर्जों में चौपाइयों का गायन होता है।

एक में चौपाइयों की गति धीमी होती है और शांत रस प्रधान होती है जिसे अराक्षसी तर्ज कहा जाता है तथा दूसरी राक्षसी तर्ज जिसका गायन भयानक रस उत्पन्न करता है तथा उग्र प्रतीत होता है। यही कारण है कि गायन पद्धति प्रसंगों के वातावरण निर्माण और पात्रों के चरित्र चित्रण में पूरी तरह समर्थ होने के कारण यहाँ के समाज में लोकप्रिय हैं। जब पूर्व काल में यातायात तथा आवागमन की असुविधा के कारण पर्वतीय ढलानों तथा घाटियों में बसे गांव के लोगों का नगरों से सम्पर्क एक कल्पना मात्र था, ऐसे समय में गांव के लोगों के जीवन में इन लोक नाट्यों का अपना अलग स्थान था। दिनभर कृषि कार्यों में तथा पशुपालन के परिश्रम के बाद भी ग्रामीण जन 'रामलीला' देखने परिवार के साथ आते थे। यह उनके लिये उत्सव के रूप में मनाया जाता था। वर्तमान में भी आज रामलीला मंचन के प्रथम दिन से लेकर दशहरे के दिन तक लोकोत्सव के रूप में ही मनाया जाता है। ग्रामीण लोगों में वही उत्सुकता देखने को मिलती है।

रामलीला मंच जिसे पूरे देश में सबसे बड़ा रंगमंच का दर्जा प्राप्त है, वह गढ़वाल में किसी भी कलाकार के लिये वह प्रथम मंच है जहां से वह अपनी कला के क्षेत्र में प्रविष्ट होता है, गढ़वाल का रामलीला मंच प्रत्येक उम्र के कलाकारों को अपनी कला को प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान करता है। संगीत, अभिनय, नृत्य अथवा चित्रकला प्रत्येक क्षेत्र में यहाँ लोगों की सहभागिता पूर्ण श्रद्धा भाव, आस्था व उत्सुकता के साथ की जाती हैं। गढ़वाल के लोक में हम देखते है कि गढ़वाल के जिस लोक गायक नरेन्द्र सिंह नेगी को उत्तराखण्डी लोक संस्कृति, लोक गीत व संगीत का रेनेशा माना जाता है उनकी कला की शुरूआत भी रामलीला के मंच से ही हुयी।

किसी भी नाटक का प्रथम उद्देश्य होता है कि एक स्वस्थ मनोरंजन, और यह उद्देश्य तभी पूरा होता है जब दर्शक वर्ग उससे सन्तुष्ट हो और उसे आनन्द की प्राप्ति हो। गढ़वाल की रामलीला में दर्शकों का पूरा सहयोग और निष्ठाभाव बना रहता है। निष्ठा भाव धार्मिक अनुष्ठान से प्रेरित हैं। क्योंकि रामलीला एक धार्मिक अनुष्ठान है और सहयोग की भावना दर्शकों में उनकी मनोरंजन सन्तुष्टि को प्रदर्शित करने का एक माध्यम हैं। इस रामलीला को कहीं से कोई भी अनुदान नहीं मिलता, लेकिन शहर की समस्त जनता चंदा इकट्ठा कर प्रति वर्ष बड़े उत्साह के साथ इसका आयोजन करती है। उनका यह भाव इस धार्मिक अनुष्ठान के अतिरिक्त लोक मंच के प्रति निष्ठा व लगन का प्रत्यक्ष प्रमाण हैं।

संदर्भ –

1. *उप्रेती, डॉ. पंकज कुमाऊं की रामलीला अध्ययन एवं स्वरांकन*
2. *सिन्हा, डॉ. सुरेखा, संगीत चिन्तन*
3. *पुरवासी (पत्रिका), 2001*
4. *नमामि रामम् (स्मारिका), 2014*